दिनांक :- 17-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- छः

पत्र :- चतुर्थी

अध्याय :- चीन की क्रांति

क्रांति की असफलता :- 1911 की चीनी क्रांति कई मामलो में असफल रही। इसके कई कारण थे। प्रथम क्रांति की असफलता का प्रमुख कारण युआन शिकाई था। वह प्रति क्रियावादी था। उसने क्रांतिकारियों के साथ विश्वास घात किया। गणतंत्र का राष्ट्रपति बनने के बाद उसने जनता के आर्थिक या सामाजिक सुधार की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

द्वितीय, चीन राष्ट्रीयता की भावना का अभाव था। लोग अलग-अलग फिरकों या कबीलों में बंटे हुए थे। उन की शासन व्यवस्था अलग अलग थी। गणतंत्र की स्थापना के बाद ही इस प्रवृत्ति का अंत नहीं हुआ। तृतीय जनता में जागरण का अभाव था। अधिकांश लोग क्रांति के प्रति उदासीन थे। उनके लिए गणतंत्र या राजतंत्र का कोई विशेष महत्व नहीं था।

चीन जैसे विशाल देश में क्रांति की लपटें व्यापक नहीं हो सकीं। ऐसी स्थिति में क्रांति करी प्रवृत्तियों को पराजय अवश्यक थी। चतुर्थ चीन की आर्थिक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रही। गणतांत्रिक सरकार ने लोगों की दयनीय आर्थिक दशा के सुधार के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया। अतः गणतंत्र को लोगों की स्वाभाविक सहानुभूति प्राप्त नहीं हो सकी।

Scanned with CamScanner

यद्यपि 1911 की क्रांति सामाजिक और आर्थिक मामलो में असफल रही, तथापि इसके राजनीतिक महत्व की उपेक्षा नही की जा सकती। यह क्रांति मुख्यतः एक राजनीतिक क्रांति थी और इसका स्वरूप राजनीतिक था। राजतंत्र के उन्मूलन के लिए क्रांति की गई थी और इसमें क्रांतिकारी सफल रहे। यह एक बहुत बड़ी घटना थी। तीन सौ वर्षो का मंचू शासन समाप्त हो गया और देश में गणतंत्र की स्थापना हुई।

युआन शिकाई — युआन शिकाई का जन्म 1859 में हेनान की एक कुलीन परिवार में हुआ था। उसकी शिक्षा-दीक्षा पर समुचित ध्यान दिया गया और वह बचपन से ही बड़ा बेनाहार दिखाई पड़ा। 1881 में वह विशेष प्रतिनिधि बनाकर कोरिया भेजा गया। वहा उसने अपनी योग्यता का परिचय दिया और उस देश पर चीन की सार्वभौम सत्ता अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया।

1895 में चीन जापान युद्ध छिड़ने के कारण यह कोरिया से वापस लौट गया। वापस लौटने पर उसने ली हुंग चांग की सेना का संगठन किया बाद में उसे चिह्ली प्रांत का वायसराय नियुक्त किया गया। शताब्दी सीय सुधार काल में सम्राट ने उसे राजमाता को कैद करने का आदेश दिया। लेकिन उसने विश्वास घात किया और राजमाता के कैद में सम्राट को ही कैद कर लिया। इसके बाद वह साम्राज्ञी का सुधार का जो कार्यक्रम बनाया। उसमें युआन प्रमुख सलाहकार बना। इसके बाद वह साम्राज्ञी ने सुधार का जो किंतु युआन बड़ा प्रतिक्रियावादी था उसे लोकतंत्र में तनिक भी विश्वास नही था किंतु वह अपने युग का एक योग्य प्रशासक था। 1910 में वह चिली प्रांत का वायसराय नियुक्त हुआ।

Scanned with CamScanner

यहाँ उसने आधुनिक ढंग से सेना का संगठन किया उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा में बड़ी वृद्धि हुई।
1908 में साम्राज्ञी त्जू सी के निधन के साथ युआन को राजकाज से अलग कर दिया गया। किंतु जब मंचू शासन संकट में पड़ गया तो पुनः युआन को प्रधान सेनापति बना दिया गया। 1911 में जब क्रांति शुरु हुई तो मंचू सम्राट ने उसे प्रधान मंत्री बना दिया। 1912 में वह चीनी गणराज्य का प्रधान मंत्री बनाया गया। चीनी गणराज्य के अध्यक्ष के रूप में युआन को कई भीषण राजनीतिक और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एक तो उसकी स्थिति कमजोर थी, अतएव वह अध्यक्ष के पद को सर्वशक्तिमान बनाना चाहता था लेकिन इसके विपरीत क्रांतिकारी नेता राष्ट्रीय विधान सभा को वास्तविक शक्ति देना चाहते थे।

लेकिन इसके विपरीत क्रांतिकारी नेता राष्ट्रीय विधान सभा को वास्तविक शक्ति देना चाहते थी वे चीन की राजधानी नानकिंग में रखना चाहते थे जबकि युआन पीकिंग में ही राजधानी रखना चहता था। कारण स्पष्ट था। पीकिंग में उसकी शक्तिशाली सेना थी और साथ ही वहाँ के विदेशी दूतावासों की सहायता पाने का भी उसे भरोसा था। युआन के समक्ष एक बड़ी समस्या देश में शांति व्यवस्था कायम करने की थी। क्रांति काल में पूरे देश में अराजकता मच गई थी। कई प्रान्तों पर से केन्द्र की सत्ता खत्म हो गई थी और प्रान्तीय सूबेदार स्वतंत्र हो गए थे। वे अपनी अपनी सेना का संगठन कर केन्द्रीय आदेशों की अवहेलना करने लग गये थे। एक दूसरी समस्या रिक्त राजकोष की थी। आय के सभी स्त्रोतों पर विदेशियों का अधिपत्य था। अकाल और अनावृष्टि के कारण

लोग परेशान थे। आर्थिक संकट से मुक्ति पाने के लिए युआन ने 26 अप्रैल, 1913 को जापान, रूस, ब्रिटेन फ्रांस और संयुक्त राज्य अमरीका से 12,500,00 डालर का ऋण प्राप्त किया किंतु जनमत विदेशी ऋण के विरुद्ध था। संसद के दोनों सदनों ने विदेशी ऋण का विरोध भी किया।
अब युआन अपने विरोधियों से निपटने में लग गया। अगस्त 1912 में संसद के सदनों के निर्वाचन की तैयारी होने लगी। सनयात सेन और उसके साथियों ने तुंग मेंग हुई को अन्य गणतंत्रीय दलों से मिलाकर एक नये राष्ट्रवादी दल कुओमिनतांग की स्थापना की। इस दल को निम्न सदन के 596 में से 269 तथा उच्च सदन के 274 में से 112 स्थान मिले। किंतु मतदान सही ढंग से नहीं हुआ। 20 मार्च 1913 को युआन के इशारे पर गणतंत्रीय सेना सुंग चिआओ जेन को शंघाई रेलवे स्टेशन पर मारा डाला गया।

Scanned with CamScanner